International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 26-09-2019; Accepted: 18-10-2019; Published: 05-11-2019
Volume 1; Issue 1; 2019; Page No. 07-08

वर्तमान परिपेक्ष्य में मूल्यों का संवर्धन

दीपा दत्तात्रय कुचेकर [1], राजेश दत्तात्रय झनकर [2]

[1] के.ऐ.ऐ.एन.एम.एस. कला, विज्ञान, वणिज्य महाविदलय सटाणा, त. बागलाण, जि. नाशिक, महाराष्ट्र, भारत

[2] के.एस.के.डब्लू. कला, विज्ञान, वणिज्य महाविद्लय, सिडको, नाशिक, महाराष्ट्र, भारत

प्रस्तावना

मूल्य संवर्धन की शिक्षा हम छात्रों को दे रहे है | व्यक्तिमत्व विकास में आवश्यक विभिन्न कौशल, मूल्य पाठ्यक्रम में शामिल किए जा रहे हैं | भारतीय कला, साहित्य, संस्कृति, मूल्य आदि का संवर्धन परम्परागत रूप में परिवार में होता था | इसके लिए ना विशेष पाठ्यक्रम था, ना वर्ग, ना अन्य कोई विशेष वर्ग | भारतीय परिवार में घर की संकल्पना, परिवार की आवश्यकता, रिश्ते- नातों का जमघट सभी के सभी मूल्य संवर्धन के केंद्र थे |

वर्तमान समय रफ्तार का, गतिशील तंत्रविज्ञान का है | वैश्विकरण ने दुनिया को मिला दिया है | बाजारीकरण, पाश्चात्यीकरण का प्रभाव सर्वत्र नजर आ रहा है | परिवारों का विघटन हो रहा है | टूटते - बिखरते परिवारों में बच्चों में मूल्यों का संवर्धन करणे का कार्य स्कूल, महाविद्लय, अनेक प्रकार की शाखाएं, संघटनाए कर रही हैं | चाहे वह बाल संस्कार केंद्र हो, संघ शिक्षा हो, विभिन्न शिबिर हो या अलग-अलग अन्तर जाल पर उपलब्ध मूल्य संवर्धन वर्ग हो |

मूल्य संवर्धन के लिए अब स्कूलों में, महाविद्यालयों में विशेष प्रावधान किए जा रहे है | पाठ्यक्रम में उनका समावेश किया जा रहा है | सशक्त स्वास्थपूर्ण व्यक्ति का निर्माण देश की उत्थान प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है | इस दृष्टि से यह उत्तरदायित्व शिक्षा संस्थानों पर हैं क्यों कि अध्यापक पीढियों का निर्माता होता है | उसके हाथों में देश-दुनिया की डोर होती है | परिवार विघटन, विवाह संस्था का टूटना रिश्तों का टूटकर बिखरना, व्यक्ति का स्व केन्द्रित होना, सामाजिक मान्यताओं में परिवर्तन, कानूनन नीति--नियमो में बदलाव, व्यक्ति स्वतंत्रता, आदि के परिणाम स्वरूप घर परिवार अब मूल्य संवर्धन का कार्य करने में असमर्थ सिद्ध हो रहे है |

इसीलिए यह कार्य अध्यापकों के हाथों में सोपा गया है | शिक्षा विभाग इसे अपना उत्तरदायित्व समजकर निभा रहा है | उस रूप में पाठ्यचर्या का निर्माण किया जा रहा है | स्त्री-पुरुष समानता, बेटीयों की आवश्यकता, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, मूल्यों के साथ-साथ संवैधानिक मूल्य न्याय, स्वतंत्र, समता, और बंधुता के मूल्यों के संवर्धन हेतु पाठ्य पुस्तकों में कहानियां, कविताएँ, पाठ्यपुस्तकेतर पाठ्यक्रम तैयार किया जा रहा है | अब बारहवीं कक्षा तक के पाठ्य पुस्तकों में हम भारतीय संविधान के उस अंश को देखते है जो न्याय, स्वतंत्रता, समता और बंधुता के मुलभूत मूल्यों को सिखाता है |

भारत का संविधान

इस में की उद्देशिका

“हम, भारत के लोग, भारत को एक [सम्पूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्यP] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता
प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त करने के लिए तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और [राष्ट्र की एकता और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई. को एतदद्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते है | ”

संदर्भ रूप में

1) संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियमन, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977) से “ प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य ” के स्थान पर प्रतिस्थापित.

2) संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियमन, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977) से “ राष्ट्र की एकता ” के स्थान पर प्रतिस्थापित.

उपरोक्त भारत का संविधान बच्चों को दोहरा ने के लिए कहाँ जाता है और बच्चे इसे पढ़ते भी है, दोहराते भी है | इस का एक-एक शब्द हम जाँचे, परखे तो हम स्वयंम भौचक हो जाते है | जो मूल्य बच्चों में ढालना चाहते है जिसका विकास बच्चों की मानसिकता में अपेक्षित रखते है उसका विपरीत और विकृत रूप हम समाज में देखते है | पाठ्यक्रम में समाविष्टित रचनाओं में देखते है |

जैसे - स्नातक प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम में समावेष्टित कहानी “ युद्ध " जो दो व्यक्तियों पर केन्द्रित हैं मगर दो धर्म का प्रतिनिधित्व करती है | ऐसे में न्याय, स्वातंत्र्य, समता, बंधुता, आदि हम बच्चो को समजाएगें, सिखाएगें पूर्णरूप से मूल्यों का संवर्धन करने की कोशिश करेंगे किन्तु जो मन के किसी कोने में खरोंचे है उनपर मरहम कैसे लगाए यह प्रश्न उपस्थित होता है | उपासना की स्वतंत्रता कहाँ है | एक ओर समानता का मूल्य बच्चों में ढालने की कोशिश करते है तो दूसरी ओर बेटा-बेटी में फर्क की बात छिडती नजर आती है | एक ओर बेटी बचाव की बात होती हैं तो दूसरी ओर बलात्कार की खबर कानोंपर आघात करती है | बेटी पढ़ाव का नारा सुनते है उस समय पढ़ी-लिखी बेटी नौकरी के क्षेत्र में झेल रहीं शोषण को याद करती है | चाहे वह शारीरिक शोषण हो या मानसिक | वह अगर जाति-जमातियों से उपर उठकर आगे बढ़ी हो तो मानसिक शोषण जाति-धर्म, श्रेष्ट-कनिष्ट, संस्कार आदि के तानों से होता रहता है | ऐसे समय प्रश्न खलता है शिक्षा का और मूल्यों का जो शिक्षा से संवर्धित किए जाते है |

पुरुष सत्ता में मात्र शोषण होता है ऐसा नहीं, मूल्यों को पैरों तले कुचला जाता है ऐसा भी नहीं है। जहाँ तक प्रत्यक्ष अनुभूती का प्रश्न है वहाँ हम जो मूल्यों के संवर्धन के ढोल पिटते रहते है वहीं हम सब से पहले मूल्यों को मसल देते है। स्त्रियों का सम्मान हो, न्याय, स्वातंत्र्य, समता का व्यवहार हो कहने वाली इन मूल्यों के संवर्धन का उत्तरदायित्व स्विकार करनेवाली शिक्षा प्रणाली, संस्थाए, संस्था चालक, संचालिका, प्रशासकीय अधिकारी, अन्य सेवक, सदस्य आदि स्वयं इन मूल्यों के अभाव के शिकार लगते है। जातियता उनमें कुट-कुट कर भरी नजर आती है।

। समानता के नाम पर गिनी-चुनी महिलाओं को ही पुरुषों के बराबर समझा जाता है। जो पिछड़ी जन-जातियों से सक्षम रूप में कार्य करती है। जो परिवार की सदस्य है पुरुषों के बराबर, समानता के न्याय से वंचित रह जाती है। वह सक्षम नहीं बनतीं मूल्यों के अभाव में उपेक्षित रह जाती है। समानता के न्याय से वंचित रह जाती है।

युवाओं को कहा जाता है हम भारत के लोग, भारत को एक बनाने के लिए (समाजवादी, पंथनिरपेक्ष लोक तंत्रात्मक गणराज्य) बोलबाला करते है। युवा शक्ति समाजवादी, पंथनिरपेक्ष नहीं बल्कि समाज को लेकर वादी बन रही है। अलग-अलग पंथ, जाति, धर्म, रंग, नेता, समाज सुधारको का अपना निजी रूप दे रहीं है। पथभ्रष्ट हो रहीं है। पंथनिरपेक्ष नहीं बल्कि निरपेक्ष रूप में अपने-अपने पंथों को बढ़ावा दे रहीं हैं और बंधुता को खत्म कर रही है। दुर्भाग्य वश कहना पड़ता हैं हम इन युवाओं को कौनसे मूल्यों की सिखा दे रहे है ? किन मूल्यों का शिक्षा, शिक्षा संस्थानों द्वारा संवर्धन हो रहा है ?

सब का साथ सब का विकास निश्चित रूप में हो रहा है मगर उनमें एक समूह, जाति, वर्ग, एकसंघ है। जो पिछड़ा है वह आज भी वहीँ नजर आता है। वह आगे बढ़ने की कोशिश भी कर ले तो उसे वहीँ दबोचा जाता है। मूल्यों की कमी का लेबल चिपकाया जाता है।

पाठ्यचर्याओं में वैविध्यपूर्ण महिन कौशल का समावेश किया गया है। उनमें व्यक्ति विकास, देश विकास का सूत्र पिरोकर मूल्यों के तहत समाविष्टित पाठ्यचर्या बनायी जा रहीं है लेकिन समाज की दशा और दिशा नजर अंदाज हो रहीं है। सामाजिक स्थितियाँ एक ओर है और मूल्यों के संवर्धन की बात एक ओर है।

समाज में दिन दहाड़े खुन होते है, जिन्दा इन्सान जलाए जाते है, गोलिया चलती है, बलात्कार होते है. बेटियों को कोख में ही मार दिया जाता है. अस्पतालों में जिता-जागता इन्सान लाश बनकर बाहर आता है कहीं किडनी का हेर-फेर है तो कहीं दिल का, अदालतों में सच को झूठ और झूठ को सच किया जाता है, पुलिस स्थानों में वारदातों की रिपोर्ट लिखने के लिए मिन्नते करनी पड़ती है, व्यवस्था में टिके रहने के लिए मूल्यों को दावपर लगाया जाता है , रिश्वतखोरों को रिश्वत देनी पडती है, पेट को भरने के लिए जिस्म निलाम होते है। बरबरता से भरी इस समाज व्यवस्था को खुले आम अख़बारों में पढ़ते है। टी वी. चैनोलो पर देखते है तो कहीं खुली आँखों से देखकर धृतराष्ट्र और गांधारी का रूप धरते है।

इस नए संवर्धित मूल्यों को बंदरों ने भी स्वीकार है। न्याय, स्वातंत्र्य, समता, बंधुता के लिए इन्हों ने अपनी जबान पर ताला, आखोंपर पट्टी और कान में रुई ठूस ली है। वे भी इस विसंगतियों से उब गए है। जैसी हमारी युवा पीढ़ी - स्कूल, महाविद्यालय में जो पढ़ाया जा रहा है वह जीवन एवं समाज में कहीं मेल नहीं खाता, एक ओर बंधुत्व की सिख मिलती है तो दूसरी ओर आरक्षण के लिए जुलूस निकलते है, हड़ताल होती है।जातियों के नाम पर बटवारा होता है। बौद्धिक समानता का स्तर , वर्णव्यवस्था, जाति-पाति की व्यवस्था में समानता सूली पर टंगी मिलती है। कार्यालयों मे काम करने वाले माता-पिता हरिजन होने से शहरों से दूर जाते है। स्वजातीय परिजन शहरों में रहते हैं। न्याय का यह मूल्य ऐसा ही नजर आता हैं. अनेको भेदों उपभेदों को दूर रखने वाला मूल्य मात्र पढ़ने तक सिमित रहता हैं। वैसे कक्षा में स्वजन अच्छे अंक और सुविधा पाता है और हरिजन उपेक्षित रह जाता है। एक ओर " मातृदेवो भव " के पाठ पढाए जाते है तो दूसरी ओर " औरत बेजगह होती है " की काव्य पंक्ति स्त्री विमर्श के नाम पर शिक्षा में शामिल होती है।

ऐसे माहोल में हम मूल्य संवर्धन की कितनी भी गतिविधियाँ करे, भारत का संविधान उनमें निहित अधिकार की बाते करे सभी व्यर्थ प्रतीत होते है। परिवर्तन हम चाहते हैं, नए मूल्यों का संवर्धन चाहते है तो परम्परागत मूल्य, संस्कार, तथा समाज व्यवस्था की मानसिकता को बदलना होगा. लोटा केवल बाहर से घिसकर नहीं चलेगा उसे अंदर से मलना पड़ेगा। पाठ्यचर्या में मूल्य संवर्धन का समावेश कर काम न होगा उसके लिए पहले जमीन तैयार करनी होगी। मन के भीतर जो गलत फहमी, कुरीति, परम्परा, झूठे आदर्श खोकला दंभ भरा पड़ा है उसे निकलना होगा। बच्चे स्कूल में कम और घर, परिवार, समाज में जादा समय रहते है। पहले उस समाज और उसकी व्यवस्था को बदलना होगा ताकि वे जो मूल्यों के रूप में विद्यालयों से पाएगे वहीँ समाज में देखेगें तभी सशक्त समाज का निर्माण हम कर पायेगे। केवल पाठ्यक्रम इसे बदल नहीं सकता जैसे बीज बोने के बाद सूरज की तपिश, चंद्रमा की शितलता और जल का सिंचन अनिवार्य हैं. वैसे ही मूल्यों के संवर्धन हेतु सशक्त, समृद्ध, समाज अनिवार्य है। जो सत्यम् शिवम् और सुन्दर होगा।

संदर्भ सूची

1. भारत का संविधान – 12 वी कक्षा का पाठ्यपुस्तक
2. मूल्य शिक्षा की हस्तपुस्तिका अध्यापकों के लिए
3. स्नातक प्रथम वर्ष 2019 - 2020 से प्रारम्भ पाठ्यपुस्तक, सावित्रीबाई फुले पुDणे विश्वविद्यालय पुणे, अध्ययन मंडल द्वारा संपादित
4. स्नातक द्वितीय वर्ष पाठ्यपुस्तक,सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय पुणे, अध्ययन मंडल द्वारा संपादित
5. युद्ध कहानी – शानी
6. बेजगह कविता – अनामिका